❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# साप्ताहिक आर्य सन्देश



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र



आर्य संदेश टीवी

www.AryaSandeshTV.com

आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल



वर्ष 45, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 1 अगस्त, 2022 से रविवार 7 अगस्त, 2022

विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123

दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh


## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त आर्यजनों, प्रान्तीय सभाओं, आर्यसमाजों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं को आह्वान

## प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय ध्वज फहराकर मनाए अमृत महोत्सव - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

## आर्यजन अपने घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों, चौक-चौराहों, सोसायटियों में पर फहराएं तिरंगा

- सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, द्विजन्मशताब्दी आयोजन समिति

## समस्त आर्य समाजें, शिक्षण संस्थान और आर्य परिवार मिलकर निकालें तिरंगा यात्रा - धर्मपाल आर्य, सभाप्रधान

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

हर घर तिरंगा

13-15 अगस्त 2022

भारत की आन, बान और शान का परम प्रतीक राष्टीय ध्वज तिरंगा है। जिसे लहराते देखकर देश के प्रहरी सैनिकों की भुजाएं फडकने लगती हैं। मन में देश प्रेम का भाव उमडने-घुमडने लगता है, विषम परिस्थितियां भी अनुकूल सी प्रतीत होने लगती हैं। क्योंकि यह कोई साधारण एक कपड़े का टुकड़ा मात्र नहीं है। यह तिरंगा झण्डा तो देश के सम्मान का, शौर्य, पराक्रम, त्याग और बलिदान का प्रेरणा स्रोत है। इसके सम्मान की रक्षा के लिए हमारे जल, थल और नभ तीनों सेनाओं के योद्धा सैनिक हमेशा सजग रहते हैं। इसकी गरिमा और महिमा को अक्षुण्ण रखने के लिए देश के असली आदर्श रणबांकुरे अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर देते हैं। 15 अगस्त 1947 से हर वर्ष

- ★ 15 अगस्त 2022 को स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ को अमृत महोत्सव के रूप में हर्षोल्लास से मनाएं।
- ★ प्रत्येक नागरिक स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त को अपने घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों, सोसायटियों, चौक-चौराहों पर ध्वजारोहण करें।
- ★ विश्व की प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर और आर्य विद्यालय, शिक्षण संस्थान, गुरुकुल स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज अवश्य फहराएं।
- ★ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपने आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों को स्वतन्त्रता दिवस मनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करें।
- ★ भारत सरकार के अभियान हर-घर तिरंगा का प्रचार-प्रसार करें और 13 से 15 अगस्त तक अपने सभी परिचितों, मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी अपने घर, दुकान, प्रतिष्ठान पर तिरंगा ध्वज लगाने के लिए प्रेरित करें।
- ★ शहीदों के बलिदान की गौरव गाथाओं से युवाओं को परिचित कराएं।
- ★ देश की स्वतंत्रता में आर्य समाज का अभूतपूर्व योगदान विषय पर गोष्ठी का आयोजन करें।
- ★ देश भक्ति के भजन, संगीत की विशेष प्रस्तुतियों का आयोजन करें।
- ★ परिवार एवं बच्चों के साथ तिरंगा फहराते हुए सोशल मीडिया पर करें फोटो/वीडिया शेयर।


राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

मात्र 30/- रुपये में

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

मो. 9540040339


तिरंगा लालकिले की प्राचीर पर देश के प्रधान मंत्री द्वारा फहराया जाता है, भारत गणराज्य के सभी राज्यों में, राजभवनों में, स्कूलों में, कालेजों में, सरकारी, गैर सरकारी सभी संस्थाओं में, गली मोहल्लों में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी उपरोक्त सभी स्थानों पर तिरंगा फहराया जाएगा। लेकिन इस बार आजादी का अमृत महोत्सव है, स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ है, इसलिए विशेष तिरंगा यात्राओं का आयोजन किया जाएगा।

देश का तिरंगा झंडा जिससे शांति, समृद्धि और प्रगति का सन्देश प्राप्त होता है, उससे शक्ति, साहस और समर्पण की शिक्षा भी मिलती है। जब तक हमारे अन्दर एकता की शक्ति, वैचारिक समृद्धि और

- शेष पृष्ठ 7 पर

## आजादी की 75वीं वर्षगांठ - अमृत महोत्सव पर सभी देशवासियों को आर्यसमाज की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं

# देश की स्वाधीनता में सबसे अधिक आर्यसमाज का योगदान: अमर शहीदों का करें गुणगान




*.....आजादी के अमृत महोत्सव की स्वर्णिम बेला है। संपूर्ण देशवासी राष्ट्र भक्ति के रंग में रंगे हुए हैं, चारों तरफ उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है। यह अवसर है अपने अमर शहीदों को स्मरण करने का, उन्हें शत-शत नमन करने का, उनसे प्रेरणा लेकर आजादी का महत्व समझने का और स्वाधीनता की सुरक्षा के लिए तन, मन, धन और जीवन को समर्पित करने हेतु संकल्प लेने का.. । अत: आइए, इस अमृत बेला पर आजादी के प्रथम प्रणेता महर्षि दयानंद सरस्वती जी से प्रेरित होकर जिन्होंने आजादी के महा संग्राम में हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूमा, अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उन अमर शहीद बलिदानियों के संक्षिप्त जीवन परिचय पढ़े, सुनें और विचार करें कि इस आजादी के लिए हमने कितनी बड़ी कीमत चुका थी, तब जाकर हमने आजादी पाई थी....*

### अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद

22 फरवरी, 1856 - 23 दिसम्बर, 1926

महर्षि दयानंद सरस्वती के महान शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी का जन्म जालंधर, पंजाब के तलवन ग्राम में 22 फरवरी 1856 को हुआ। राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुलों की स्थापना, जामा मस्जिद से भाषण, रोलेट एक्ट के विरोध का नेतृत्व, कांग्रेस अधिवेश की अध्यक्षता तथा आजीवन शुद्धि आंदोलन चलाकर देश की एकता-अखंडता और आजादी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 23 दिसंबर 1926 को धर्मांध अब्दुल रशीद द्वारा गोली लगने से वे सदा के लिए अमर हो गए। आजादी के अमृत महोत्सव पर हमारा शत-शत नमन।

### श्यामजी कृष्ण वर्मा

4 अक्टूबर 1857-30 मार्च 1930

महान क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा अन्य अनेक क्रान्तिकारियों कि भांति आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज से प्रेरित थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा से राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा पाकर ही विनायक दामोदर सावरकर देश की आजादी के लिए मर मिटने वाले राष्ट्र भक्तों का जन्म हुआ। वे पहले भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-ऐट-ला की उपाधियाँ मिलीं थीं। उन्होंने लन्दन में इण्डिया हाउस की स्थापना की जो भारतीय छात्रों के परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श का एक प्रमुख केन्द्र सिद्ध हुआ। ३० मार्च १९३० को जिनेवा, स्विट्जरलैंड में वे अमर हो गए।

### लाला लाजपत राय

28 जनवरी 1965-17 नवम्बर 1928

आर्य समाज के महान राष्ट्र भक्तों में लाला लाजपत राय एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे।

- शेष पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

## ज्ञानी भक्त और विषयास्क्त

वेद-स्वाध्याय

**यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोम सुनोति भवति द्युमॉ अह।**
**अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।।** ऋ. 5/34/3
ऋषिः **संवरणः प्राजापत्यः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

**शब्दार्थ** - **यः**=जो **घ्रंस उत वा यः ऊधनि**= दिन होवे या रात सदैव ही जो **अस्मै**=इस परमेश्वर के लिए **सोमं सुनोति**=ज्ञानपूर्वक भक्ति में रहता है, यजन करता है **अह द्युमान् भवति**= वह निश्चय से तेजस्वी (प्रकाशवान्) हो जाता है ओर इसके विपरीत **ततनुष्टिम्**= विषयों में दिनों-दिन फँसते जाने वाले को, स्वार्थरत, अजयनशील को, **तनूशुभ्रम्**=शरीर की सजावट-बनावट में लगे रहने वाले को **यः कवासखः**= और जो बुरी संगत में रहने वाला है, जिसके कि यार-दोस्त कुत्सित-कर्मा लोग हैं, उस पुरुष को भी **शक्रः मघवा**= सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्यवाला इन्द्रदेव **अप अप ऊहति**= मिटा देता है, विनाश कर देता है।

**विनय** - मैं इन दो प्रकार के आदमियों में से कौन-सा हूँ? क्या मुझे दिन-रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आनन्द आता है? क्या मैं चौबीस घण्टे उसके भजन में लीन रहता हूँ। चौबीस घण्टे न सही, क्या मैं दिन-रात में से एक घण्टा भी भगवान् के प्रति अपना हार्दिक प्रेमरस पहुंचाने में बिताता हूं? अथवा मैं 'ततनुष्टि' हूँ? दिन-रात विषयों में फँसा रहता हूँ? न खत्म होने वाले विषयों की तृप्ति में लगा रहता हूँ? स्वार्थ के लिए धन कमाने की चिन्ता में और धन के लिए दूसरों के क्लेशों की कुछ परवाह न करके और धोखा-फ़रेब भी करके उनके चूसने की नाना नयी-नयी तरकीबें सोचने और करने की फिक्र में तो कहीं मेरे दिन-रात नहीं बीतते हैं? क्या अपने शरीर की शोभा बढ़ाने, संवारने, शृंगार करने में ही जीवन के अमूल्य समय के प्रतिदिन कई घण्टे मैं नहीं खो रहा हूँ? क्या मैंने अपने अन्दर के मानसिक शरीर को भी बलवान्, स्वच्छ और सुन्दर (पवित्र) करने का भी कभी यत्न किया है? इसके लिए समय दिया है? मेरे साथी-संगी कैसे लोग हैं? कहीं मेरे इर्द-गिर्द बुरे आचरणवाले लोग तो इकट्ठे नहीं हो गये हैं? कहीं मैं कुत्सित कर्म करने वाले दुष्ट मनुष्यों से (जो ऊपर से आकर्षक होते हैं) मिलने-जुलने में आनन्द तो नहीं पाता हूं? अहो, उस सर्वशक्तिमान्- इन्द्र के नियम अटल हैं, मैं जैसा करूंगा वैसा ही मुझे भरना पड़ेगा। मैं तेजस्वी बनूंगा या मेरा विनाश होगा? भगवान् तो दिन-रात सोम-सवन करने वालों को तेजस्वी बना रहा है और विषय-ग्रस्त पुरुषों का नाश कर रहा है।

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

## आजादी का अमृत महोत्सवः आईए विचार करें - तब, अब और आगे?

*पुण्यमय भारत देश अपनी स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ पूरे उमंग, उत्साह और उल्लास से मना रहा है। और क्यों न मनाएं? यह तो हमारी आन, बान और शान का द्योतक राष्टीय पर्व है, हमारी आजादी का अमृत महोत्सव है, इसके लिए ही तो हमारे अमर शहीदों ने कठिन से कठिन यातनाएं भी हंसते मुस्करातेे सही थी। अपना सर्वस्व भारत माता को परतंत्रता की बेडियों से मुक्त कराने के लिए आहूत कर दिया था। फांसी के फंदे को चूमते हुए भी हमारे अमर वीरबलिदानियों ने देश भक्ति के गीत गाए और गुनगुनाए थे। यूं तो हम पिछले 74 वर्षों से हर वर्ष अपना स्वाधीनता दिवस मनाते आ रहे हैं, इस वर्ष भी मना रहे हैं लेकिन इस अवसर पर हमें यह अवश्य विचारना चाहिए कि हम पराधीन क्यों हो गए थे? पराधीनता से पूर्व हम क्या थे? हमारा गौरवशाली इतिहास कैसा था? आजादी के लिए हमारे अमर शहीदों ने किस तरह का पराकम दिखाया, कैसी कैसी कुर्बानी दी? इन समस्त बिदुओं पर विचारते हुए हमें यह भी सोचना चाहिए कि आज की परिसंथितियों में आजादी का उत्सव मनाना तो अत्यंत सरल, सहज और स्वाभाविक भी है किंतु आजादी को सुरक्षित रखने की चुनौति कितनी कठिन और मुश्किल है? अर्थात तब, अब और आगे?*

य ह सर्वविदित है कि संपूर्ण विश्व भारत को सम्मान से सोने की चिड़िया के नाम से पुकारता था। विश्व गुरु होने का गौरव भी भारत को ही प्राप्त था। हमारी संस्कृति विश्व की आदर्श संस्कृति थीं, यहीं से विश्व के लोग शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते थे। उस समय यहां पर उचित न्याय व्यवस्था थीं, धन-धान्य की कमी नहीं थी, खान-पान शुद्ध और पौष्टिक था, चारों तरफ सुख-शांति प्रेम सौहार्द का वातावरण था। लेकिन बहते समय के प्रवाह के साथ भारत वासियों का आचरण और व्यवहार बदला और देखते ही देखते हमारे भारत देश पर परतंत्रता के बादल मंडराने लगे और भारत माता परतंत्रता की बेडियो में जकडी गई। पहले हमारे ऊपर मुगलों ने शासन किया और फिर अंग्रेजों ने अपना अधिपत्य जमाया। लगभग एक हजार वर्षो की दासता के लंबे कालखंड में 19वी सदी में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने देश की हालत को करीब से देखा और अनुभव किया कि क्या यह वही देश है जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, जहां कपिल-कणाद, गौतम जैसे ऋषि मुनि जन्मे, जहां वेद-उपनिषद, दर्शन, स्मृतिग्रंथ रूपी ज्ञान संपदा का खजाना था, जहां यज्ञ-योग-स्वाध्याय, सत्संग-सेवा, साधना समर्पण की घर घर से खुशबू आती थी, वहां आज ढोंग-पाखंड, अविद्या का अंधकार है। चारों तरफ अज्ञान के कारण कुरीतियों के प्रहार हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि ने आजादी का सिंहनाद किया, क्रांतिकारी भाषण दिये, निर्भीकता से स्वदेशी राज्य को श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि चाहे विदेशी राजा कितना भी अच्छा हो लेकिन स्वदेशी से अच्छा कभी नहीं हो सकता। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के प्रताप से देश में स्वाधीनता की क्रांति की लहर प्रवाहित होने लगीं, भारत माता को आजाद कराने वीर सपूतों की टोलियां निकलने लगी, देश के रण बांकुरों ने सर पर कफन बांध लिया और इस तरह अनगिनत अमर बलिदानियों की शहादत के बल पर 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हो गया।

हमारा देश आजाद तो हुआ लेकिन इसके साथ सबसे बड़ी विडम्बना यह रही कि जिन्होंने इस देश की स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानियां दीं, अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, वे आज़ाद भारत का सुख भोगने के लिए नहीं बचे। और जो बचे हैं, उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए कुछ भी दांव पर नहीं लगाया, इसलिए उन्हें स्वतन्त्रता की कीमत का बोध नहीं है। यही कारण है कि यह देश अपनी स्वतन्त्रता का पूरा लाभ नहीं ले पाया। आज़ादी की 75 वीं वर्षगांठ पर भी देश में अनेक असमानताएं विधमान हैं, कई तरह की अव्यवस्थाएं गतिशील हैं। यहां कदम-कदम पर भेद भावपूर्ण नीतियां दिखाई देती हैं, आज भी शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय व्यवस्था आदि में बड़ी भारी खामियां हैं। एक वर्ग विशेष द्वारा भारत की उन्नति प्रगति में लगातार बाधाएं पैदा की जा रही हैं। वे भारत में रहते हैं, खाते-पीते और मौज उडाते हैं लेकिन इसके टुकडे करने की, इससे आजाद होने की मांग समय समय पर करते रहते हैं। उनकी हिंसक और विध्वंशक प्रवृति लगातार बढती ही जा रही है।

15 अगस्त 2022 को देश का 75वां स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महान राष्ट्रीय पर्व की सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। लेकिन यह पर्व हर वर्ष हम भारतवासियों में नई चेतना जगाने के लिए आता है, राष्ट्रभक्ति का संदेश देने आता है, परंतु हम लोग ऐसी गहरी नींद में सोए हुए हैं कि जागते ही नहीं। अगर समय रहते हम नहीं जागे, हमने अपने अमर शहीदों को स्मरण नहीं रखा, उनसे प्रेरणा नहीं ली, अपने देश के प्रति मन में प्रेम समर्पण नहीं जगाया तो हमारी आजादी के सही मायने समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। आज इतनी भयावह स्थिति से हम गुजर रहे हैं कि हमारी युवा पीढ़ी को अपने अमर शहीदों के पांच नाम भी याद नहीं हैं। इसलिए आज की युवा पीढी को आजादी की कीमत को समझना ही होगा, पराधीनता सबसे बड़ा दु:ख है, यह याद रखना होगा, स्वाीधनता के लिए किए गए त्याग, बलिदान और समर्पण को नमन करना ही होगा।

***शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,***
***वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशा होगा।***
***इलाही वो भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे,***
***अपनी जमी होगी अपना आसमा होगा।।***

अपने बलिदान से जिन्होंने आज़ादी का मार्ग प्रशस्त किया; उनमें चाहे फांसी के फन्दे को चूमने वाला वीर भगतसिंह हो या जीवन के अंतिम पल तक आजाद रहने वाला चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, उधम सिंह, राजेंद्रनाथ लाहिडी आदि सभी महान् बलिदानियों को याद करने का पावन दिन पन्द्रह अगस्त तो है ही लेकिन उनकी अमर प्रेरणा के अनुसार देश प्रेम की ज्योति को अपने मन में सतत प्रज्ज्वलित रखने की अत्यंत आवश्यकता है। जिन्होंने आजादी का स्वप्न देखा, जिन्होंने स्वयं यातनाएं सहीं और आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। वे असाधारण महान बलिदानी वीर थे।

सुख-सुविधा में जीने वाले बहुत लोग होते हैं। अपने ही स्वार्थो में जीवित रहने वाले भी दुनिया में बहुत हैं। अपने परिवार की मोह-ममता में पड़कर अपने ही परिवार का पालन-पोषण करने वाले लोग भी बहुत हैं और अपनों के लिए अपनी विरासत छोडकर जाने वाले लोग भी बहुत हैं। लेकिन देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले और देश की उन्नति प्रगति के लिए अपनी विरासत को छोड़ने वाले लोग दुनिया में बहुत कम हुआ करते हैं। इसलिए देश पर मर मिटने वाले लोग इस संसार में सबके पूजनीय एवं आदर्श हुआ करते हैं। वे देश के उज्ज्वल नक्षत्र होते हैं।

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

**शहीद-ए-आजम भगत सिंह क्रान्तिकारी या आतंकवादी**

# न्याय के लिए भटकते क्रान्तिकारी

*.....देश के लोग जानते है कि भगत सिंह ने देश के लिए अपनी जान दे दी, लेकिन सरकार को शहीद घोषित करने में क्या दिक्कत है ये सवाल जरुर बन जाता है? हो सकता है कि सरकार को भगत सिंह से कोई सियासी फायदा नहीं होता हो! इसलिए वह इस बारे में जज्बात भी नहीं दिखाती। हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार जब चाहे तब भगत सिंह को दस्तावेजों में शहीद घोषित कर सकती है, इसमें कोई तकनीकी दिक्कत नहीं है। भगत सिंह अंग्रेजों के लिए आतंकी थे, हमारे लिए वह शहीद अमर बलिदानी हैं। लेकिन दुर्भाग्य ये है कि आजाद भारत में भी उन्हें कुछ किताबों में क्रांतिकारी आतंकी लिखा जा रहा है और सिमरनजीत सिंह जैसे सांसद खुलेआम भगतसिंह को आतंकी बोल रहे हैं क्योंकि वे जानते हैं वे वही बोल रहे हैं जो सरकारी रिकॉर्ड में लिखा है। इस कारण उनका कुछ नहीं बिगड़ सकता है। किन्तु शर्म का विषय यह है जब देश अपना आजादी का अमृतमहोत्सव मना रहा हो उस समय क्रांतिकारियों के लिए आतंकी जैसे शब्दों का संबोधन हो रहा हो तो कोई माँ क्यों देशभक्त पैदा करना चाहेगी?.....*

शहीदे आजम भगत सिंह ने सोचा भी नहीं होगा कि जिस देश की स्वतन्त्रता के लिए वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ वह फांसी के तख्ते पर झूल रहा है, बाद में उनकी देशभक्ति और शौर्य गाथा को आजादी के 75 वर्ष बाद उस देश के जनप्रतिनिधि आतंकी जैसे शब्दों से पुकारेंगे। हाल ही में पंजाब के संगरूर से उपचुनाव जीते अकाली दल के सांसद सिमरनजीत सिंह मान ने एक बार फिर शहीद ए आजम भगत सिंह को आतंकवादी बताया है। हालाँकि सिमरनजीत सिंह मान के इस बयान को शेयर करते हुए कवि कुमार विश्वास ने लिखा कि 'शहीद ए आजम भगत सिंह हम शर्मिंदा हैं। शायद हम स्वार्थी लोग आपके बलिदान के अधिकारी ही नहीं थे, सब राजनितिक दल अपने-अपने लोभ और डर से चुप हैं।

आज देश में आजादी का 75वां अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है लेकिन कमाल देखिये इस साल की 22मार्च को आजमगढ़ में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत मंगलवार को कलेक्ट्रेट के सामने आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी ने जब बच्चों से शहीद भगत सिंह के बारे में पूछा तो वे जवाब नहीं दे पाए। जिलाधिकारी ने बच्चों से पूछा शहीद भगत सिंह कौन थे? इसका जवाब बच्चे नहीं दे सके। इसके बाद जिलाधिकारी ने एसडीएम वित्त और राजस्व को शहीद भगत सिंह के बारे में बच्चों को जानकारी देने के लिए कहा।

यानि एक देश के अन्दर दो देश बन चुके हैं। एक देश में बच्चे यही तक नहीं जानते कि सरदार भगतसिंह कौन थे और दूसरा देश है जहाँ जनता द्वारा चुने जनप्रतिनिधि भगतसिंह जैसे महान क्रन्तिकारी उस समय की ब्रिटिश हकुमत के लिए खौफ का पर्याय बन गया था। वो हकुमत, जो ये तक कहा करती थी कि हमारे राज्य में सूरज भी नहीं डूबता। लेकिन उस युवा के विचारों से ब्रिटिश हकुमत में ऐसा खौफ छाया कि उसे अपना सूरज डूबता दिखाई देने लगा था।

लेकिन कमाल देखिये कि आखिर देश की आजादी के लिए बलिदान होने वाले सरदार भगतसिंह जी को आजतक शहीद का दर्जा क्यों नहीं दिया गया? देश अब आजादी का 75वां अमृत महोत्सव मना रहा है लेकिन अभी सरकारी कागजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भगतसिंह को क्रन्तिकारी आतंकी ही माना जाता रहा है।

ऐसा नहीं है कि यह मुद्दा देश के सरकारों या जनप्रतिनिधियों के संज्ञान में नहीं है। बल्कि कई बार यह मुद्दा देश की संसद तक में गूंज भी चूका है। एक बार 17 अगस्त 2013 में देश की तत्कालीन मनमोहन सरकार ने राज्यसभा में भगत सिंह को शहीद माना था, साथ ही पीएमओ की वेबसाइट पर भी लिखा गया था कि शहीद भगत सिंह द्वारा दिए गए सर्वोच्च बलिदान पर देश में किसी को भी सवाल नहीं उठाना चाहिए। लेकिन इसके बावजूद अब तक रिकॉर्ड में सुधार नहीं हुआ। भगत सिंह को जो अंग्रेज मानते थे, आजादी के बाद सरकारी रिकॉर्ड में आज भी वही स्थिति है। उनके वंशज भगतसिंह को शहीद का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर लगातार आंदोलन करते रहे हैं।

भगत सिंह के प्रपौत्र यादवेंद्र सिंह संधू हमेशा कहते हैं कि आजादी के बाद सभी सरकारों ने सिर्फ नरम दल वालों को सम्मान दिया, जबकि गरम दल वाले क्रांतिकारी हाशिए पर रहे हैं। शहीद-ए-आजम के प्रपौत्र यादवेंद्र सिंह कहते हैं कि गरम दल यानी क्रांतिकारियों के प्रति जो नजरिया अंग्रेजी हुकूमत का था आजाद भारत की सरकारों का रवैया उससे ज्यादा अलग नहीं है। वरना क्या अपने लहू से भारत को आजाद करवाने वालों को अब तक शहीद का दर्जा तक नहीं मिलता? कैबिनेट में एक प्रस्ताव लाकर भगत सिंह सहित आजादी के सभी क्रांतिवीरों को ऑफिशियल रिकॉर्ड में शहीद घोषित किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए सांसदों, मंत्रियों के पास शायद वक्त नहीं है। हम कोई रुपया पैसा नहीं मांग रहे, हम वो मांग रहे हैं जिस स्टेटस के क्रांतिकारी हकदार थे।

सिर्फ भगतसिंह के वंशज ही नहीं आपको जानकर आश्चर्य होगा कि संधू के साथ-साथ सुखदेव और राजगुरु के वंशज जलियांवाला बाग से इंडिया गेट तक शहीद सम्मान जागृति यात्रा निकाल चुके हैं। संधू तो इस मुद्दे को लेकर अमित शाह, राजनाथ सिंह, प्रकाश जावड़ेकर, स्मृति ईरानी, विनय सहस्त्रबुद्धे से मिल चुके हैं। सहस्त्रबुद्धे गृहमंत्री को पत्र लिख चुके हैं। लेकिन हुआ कुछ नहीं।

साल 2016 में राज्यसभा में खूब बहस होती है। जेडीयू नेता केसी त्यागी इस मुद्दे को उठाते हैं क्योंकि दिल्ली यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम भारत का स्वतंत्रता संघर्ष नामक पुस्तक में जिसमें भगतसिंह को क्रन्तिकारी आतंकी लिखा गया था। लेकिन तमाशा देखिये! संसद में तो देश के नेतागण देश पर बलिदान हुए

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

**स्वास्थ्य रक्षा**

## उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

*आर्य सन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अत: अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक*

*गतांक से आगे*

**-: दमा :-**

1. नीम तेल शुद्ध 3-6 बूंद तक पान में रखकर खाने से श्वास रोग: शान्त होते हैं।
2. 5 ग्राम दालचीनी, 5 ग्राम गुड़ साथ सुबह-सायं तीन माह सेवन तक करें।
3. गोमूत्र 10 ग्राम सुबह-शाम खाली पेट पीवें।

**-: श्वास-दमा :-**

1. वायविडंग, सफेद पुनर्नवा, चित्रक की जड़ की छाल।
2. सतगिलोय 3. सौंठ 4. कालीमिर्च 5. अश्वगंध नागौरी 6. छोटी पीपल 7. असली विधरा 8. बड़ी हरड़ (काबड़ी हरड़) की बकली (छिलका) 9. बहेड़ा की बकली 10. आवंला की बकली सभी 200-200ग्राम खरीद लें, साफकर बारीक कूटें पुराना गुड़ की एक तार चासनी बनाकर 6-6 गोलियों बनाकर सुखा लें।
4. लहसुन की दो कली 200ग्राम दूध में उबालें खीर की तरह गाढ़ा होने पर सेवन करें। दोनों समय।
5. सोते समय दोनों नाकों में 2-2 बूंद सरसों तेल डालें-अश्वगंधा चूर्ण + सोंठ चूर्ण +1 चम्मच सोते समय सेवन करें।
6. पीपल के तीन पत्ते प्रात: खाली पेट सेवन करें 6 माह।
7. गोमूत्र 10 मिलि. पतंजलि खाली पेट सेवन करें।
8. पुनर्नवा जड़ का चूर्ण 3 ग्राम + 500 ग्राम हल्दी मिलाकर प्रात:-शाम सेवन करें।

**प्राणायाम**- कपालभाति, सूर्य भेदी, अग्निसार

**आसन**- शीर्षासन, सर्पासन, शल्भासन, हलासन, धनुरासन, वज्रासन। (हमेशा गर्म पानी पीवें)

**-: खूनी बवासीर :-**

1. आंवला चूर्ण 6 ग्राम सुबह-शाम गाय के दूध के साथ।
2. अंजीर 2 पीस पानी में भिगोकर प्रात: खाली पेट सेवन करें। सुबह भिगोकर शाम को खावें प्रतिदिन छाछ (मठ्ठा)।
3. 2 ग्राम अजवायन भूनी हुई, 2ग्राम काला नमक मिलाकर दोपहर पीवें।
4. सूखे नारियल की जटा (मिट्टी की बर्तन में रखकर) जलावें राख को छानकर रख लें। जटा भस्म को 3-3 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार खाली पेट, डेढ़ कप छाछ (खट्टा न हो) एक ही दिन लें। जामुन के 4 पत्ते प्रतिदिन भोजन के 1 घंटे बाद लें, गोमूत्र 10मिलि. सुबह खाली पेट लें।
5. पीपली चूर्ण 5 ग्राम + भुना जीरा + सेंधा नमक 2 ग्राम मिलाकर छाछ के साथ सुबह खाली पेट पीवें।

निषेध- गोभी (फूलपत्ता) आलू, उडद, मैदा, बेसन, अचार, खटाई न खाएं।

**-: शक्ति वर्धक व कद वर्धक :-**

1. नागौरी अश्वगंध (जड) चूर्ण 200ग्राम + मिश्रि 200ग्राम दोनों का चूर्ण बनाकर शीशी में रखें। रात्रि सोते समय 6ग्राम चूर्ण गाय के दूध में सेवन करें दुबलापन दूर होकर बल और लंबाई में वृद्धि होती है। वीर्य पुष्ट होता है। 40 दिन तक सेवन करें।

**निषेध**- खटाई, चाय, चीनी, वासी भोजन।

2. तीन अंजीर दूध में उबलकर प्रात: 3 माह खाने पर बल वृद्धि होती है।
3. अंकुरित चना 25 ग्राम + गुड़ का प्रात: व्यायाम के बाद सेवन करें।

आसन- चक्रसन, धनुरासन, मयूरासन, नटराजसन का अभ्यास करें।

4. जलेबी + दूध या दूध + केला का सेवन करें।

**एक्यूप्रेशर**- बेड, लिवर, किडनी, स्टोमक, हृदय, थाइराइट के प्वाइंट दबावें।

5. अश्वगंधा 100ग्राम + शतावर 100ग्राम + सफेद मूसली 100ग्राम + मिश्रि 100ग्राम सभी चूर्ण मिलाकर सोते समय डेढ़ चम्मच दूध के साथ सेवन करें, स्फूर्ति एवं बलदायक।

प्रथम पृष्ठ का शेष

## देश की स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों को शत-शत नमन

इन्हें पंजाब केसरी भी कहा जाता है। इन्होंने पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की थी ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल में से एक थे। सन् १९२८ में इन्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध एक प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और अन्ततः १७ नवम्बर सन् १९२८ को इनकी महान आत्मा ने पार्थिव देह त्याग दी।

### भाई परमानन्द

(4 नवम्बर 1876-8 दिसम्बर 1947)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे जहाँ आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक थे, वहीं इतिहासकार, साहित्यमनीषी और शिक्षाविद् के रूप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की थी। सरदार भगत सिंह, सुखदेव, पं राम प्रसाद बिस्मिल, करतार सिंह सराभा जैसे असंख्य राष्ट्रभक्त युवक उनसे प्रेरणा प्राप्त कर बलि-पथ के राही बने थे। 8 दिसम्बर 1947 के वे अमर हो गए

### विनायक दामोदर सावरकर

28 मई 1883 - 26 फरवरी 1966

महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा से प्रेरित विनायक दामोदर सावरकर एक महान क्रांतिकारी, समाजसुधारक, इतिहासकार, राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उन्हें प्रायः स्वातन्त्र्यवीर और वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है, देश की आजादी के लिए उन्होंने काले पानी की सजा भी काटी थी। वे एक वकील, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक और नाटककार भी थे। उन्होंने आर्य समाज के अनुसार परिवर्तित हिन्दुओं की घर वापसी हेतु सतत प्रयास किये एवं इसके लिए आन्दोलन चलाये।

### राम प्रसाद बिस्मिल

11 जून 1897 - 19 दिसम्बर 1927

आर्य समाज और घर दोनों में से एक को चुनना, पिता के इस आदेश पर आर्य समाज का चुनाव करने वाले, आर्य समाज मेरी मां है का उदघोष करने वाले रामप्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे। वे मैनपुरी षड्यन्त्र व काकोरी-काण्ड जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के सदस्य भी थे। भारत मां की आजादी के लिए 30 वर्ष की आयु में हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूमकर शहीद हो गए।

### ठाकुर रोशन सिंह

22 जनवरी 1892-19 दिसंबर 1927

रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां के साथ हंसते हंसते फांसी के फंदे पर झूलने वाले ठाकुर रोशन सिंह बरेली गोली-काण्ड में सजा काटने के बाद हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन में शामिल हो गये। यद्यपि ठाकुर साहब ने काकोरी काण्ड में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया था फिर भी आपको काकोरी-काण्ड के सूत्रधार पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खाँ के साथ 19 दिसम्बर 1927 को फाँसी दे दी गयी। ये तीनों ही क्रान्तिकारी उत्तर प्रदेश के शहीदगढ़ कहे जाने वाले जनपद शाहजहाँपुर के रहने वाले थे।

### राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

29 जून 1901-17 दिसम्बर 1927

भारतीय स्वाधीनता के महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले युवा क्रान्तिकारी राजेंद्र नाथ लाहिड़ी प्रसिद्धि काकोरी काण्ड के एक प्रमुख अभियुक्त के रूप में थे। रामप्रसाद बिस्मिल के आर्य समाजी विचारों को धारण करके आप रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के प्रमुख सदस्य के रूप में भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करना था। 17 दिसम्बर 1927 को गोण्डा के जिला कारागार में उन्हें फाँसी की सजा दे दी गयी थी।

### भगत सिंह

28 सितम्बर 1907 - 23 मार्च 1931

सरदार भगत सिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार स्वयं महर्षि दयानंद सरस्वती ने कराया था। उनका सारा परिवार आर्य विचारधारा के अनुसार राष्ट्रभक्त था। भगतसिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। पहले लाहौर में बर्नी सॉडर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया।

### शहीद राजगुरु

24 अगस्त 1908 - 23 मार्च 1931

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रान्तिकारियों में से एक राजगुरु आर्य समाज की विचारधारा से ओतप्रोत थे। राजगुरु को भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी।

### शहीद सुखदेव

15 मई 1907 - 23 मार्च 1931

अमर क्रांतिकारी सुखदेव थापर ने लाला लाजपत राय की शहादत का बदला लिया था। इन्होने भगत सिंह को मार्ग दर्शन दिखाया था। इन्होने ही लाला लाजपत राय जी से मिलकर चंद्रशेखर आजाद जी को मिलने कि इच्छा जाहिर की थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। उन्हें भगत सिंह और राजगुरु के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था। इनके बलिदान को आज भी सम्पूर्ण भारत में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। सुखदेव भगत सिंह की तरह बचपन से ही आजादी का सपना पाले हुए थे। ये दोनों 'लाहौर नेशनल कॉलेज' के छात्र थे। दोनों एक ही वर्ष पंजाब में पैदा हुए और एक ही साथ शहीद हो गए।

### मदनलाल ढींगरा

18 सितंबर 1883 - 17 अगस्त 1909

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अप्रतिम क्रान्तिकारी मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि की ज्वाला में बदलने वाले महान क्रांतिकारी थे। मदन लाल ढींगरा के परिवार में राष्ट्रभक्ति की कोई ऐसी परंपरा नहीं थी किंतु वे श्याम जी कृष्ण वर्मा की आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर देश भक्ति के रंग में रंगे गए थे। वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे जहाँ उन्होने विलियम हट कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी। कर्जन वायली की हत्या के आरोप में उन पर 23 जुलाई, 1909 का अभियोग चलाया गया। मदन लाल ढींगरा ने अदालत में खुले शब्दों में कहा कि "मुझे गर्व है कि मैं अपना जीवन समर्पित कर रहा हूं।" यह घटना बीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है।

### राजा महेन्द्र प्रताप सिंह

1 दिसम्बर 1886 - 29 अप्रैल 1979

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त थे। वे एक कुशल पत्रकार, लेखक, क्रांतिकारी, समाज सुधारक और महान दानवीर थे। वे 'आर्यन पेशवा' के नाम से प्रसिद्ध थे और भारत की अंन्तरिम सरकार के अध्यक्ष थे। यह सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बनी थी और भारत के बाहर से संचालित हुई थी। उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1940 में जापान में 'भारतीय कार्यकारी बोर्ड' (Executive Board of India) की स्थापना की थी। अपने कॉलेज के साथियों के साथ मिलकर उन्होने सन 1911 में बाल्कन युद्ध में भी भाग लिया। उनकी सेवाओं को याद करते हुए भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया है।

### बटुकेश्वर दत्त

18 नवंबर 1910 - 20 जुलाई 1965

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक क्रान्तिकारी बटुकेश्वर दत्त को देश ने सबसे पहले 8 अप्रैल 1929 को जाना, जब वे भगत सिंह के साथ केन्द्रीय विधान सभा में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार किए गए। उन्होनें आगरा में स्वतंत्रता आन्दोलन को संगठित करने में उल्लेखनीय कार्य किया था।

### स्वामी सोमदेव
### रामप्रसाद बिस्मिल के गुरु

आर्य समाज के एक विद्वान धर्मोपदेशक थे। किशोरावस्था में स्वामी सोमदेव की सत्संगति पाकर बालक रामप्रसाद आगे चलकर 'बिस्मिल' जैसा बेजोड़ क्रान्तिकारी बन सका। रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में मेरे गुरुदेव शीर्षक से उनकी संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित जीवनी लिखी है। ब्रिटिश राज के दौरान पंजाब प्रान्त के लाहौर शहर में जन्मे स्वामी सोमदेव का वास्तविक नाम ब्रजलाल चोपड़ा था। किंतु उनकी जन्म तिथि और अमर दिवस की सही जानकारी अप्राप्त है।

### गणेश शंकर विद्यार्थी

26 अक्टूबर 1890- 25 मार्च 1931

वैदिक धर्म संस्कृति से प्रभावित गणेश शंकर विद्यार्थी एक भारतीय पत्रकार, भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन के नेता और स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकर्ता थे। वह असहयोग आंदोलन और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, जिन्होंने कभी विक्टॉर ह्यूगो के उपन्यास नाइंटी-थ्री का अनुवाद किया था, और ज्यादातर हिन्दी भाषा के समाचार पत्र, प्रताप के संस्थापक-संपादक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने देश की आजादी के लिए वैचारिक क्रांति की लहर चलाने में विशेष योगदान दिया था।

### जयचन्द विद्यालंकार

5 दिसंबर, 1898

स्वामी श्रद्धानंद के शिष्य और महान क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह के गुरु जयचंद विद्यालंकार भारत के महान इतिहासकार एवं लेखक थे। गुरुकुल कांगड़ी से शिक्षा प्राप्त करके आपने 'भारतीय इतिहास परिषद' नामक संस्था खड़ी की थी। जयचन्द्र विद्यालंकार भारत में इतिहास की ऐसी प्रतिभा माने जाते हैं कि लोगों ने इतिहास की उनकी मूल धारणाओं तक पहुँचने के लिये विधिवत हिन्दी का अध्ययन किया। उन्हें अपनी धारणाएं हिन्दी में ही सामने रखने की जिद थी।

### पंडित जगत राम आर्य

वैदिक ज्ञानधारा के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित पंडित जगतराम आर्य 1968 में किताब घर की शुरुआत की थी।

उन्होंने अपने जीवन काल में महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया। अगस्त 1993 में उनका देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में एक वार्षिक साहित्यिक सम्मान स्थापित करने का निर्णय प्रकाशन के संचालकों द्वारा लिया गया। 16 दिसंबर को उनका जन्मदिवस पड़ता है, अतएव यह निर्णय किया गया की उस दिन "आर्य स्मृति साहित्य सम्मान" का आयोजन सम्मान समारोह के रूप में किया जाये।

### मास्टर अमीर चंद

1869 - 8 मई 1915

भारत की आजादी के संग्राम में क्रांतिकारी अमीर चंद का योगदान अविस्मरणीय है। अमीर चंद का जन्म 1869 में हैदराबाद की विधानसभा के सेक्रेटरी के घर हुआ था। उनके मन में देश भक्ति की मान्यता इतनी प्रबल थी कि स्वदेशी आंदोलन के दौरान हैदराबाद के बाजार में उन्होंने स्वदेशी स्टोर खोला जहां वह देशभक्तों की तस्वीरें तथा क्रांतिकारी साहित्य बेचते थे। 1911 में दिल्ली में भी स्वदेशी प्रदर्शनी लगाई। 1912 में दिल्ली में उस समय के वायसराय लार्ड हार्डिग पर बम फेंकने की घटना में सक्रिय भूमिका निभाई। 1914 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1915 में उन्हें तीन साथियों (अवध बिहारी, बाल मुकुंद, बसन्त कुमार बिस्वास) के साथ दिल्ली केंद्रीय जेल में फांसी दे दी गई।

### विष्णु गणेश पिंगले

2 जनवरी 1888 -17 नवम्बर 1915

भारत की स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारी, गदर पार्टी के सदस्य विष्णु गणेश पिंगले सन 1911 में इंजीनियरिंग की शिक्षा के दौरान अमेरिका में आर्य क्रांतिकारी लाला हरदयाल और करतार सिंह सराभा से मिले। उनकी प्रेरणा से वे भारत वापिस लौटे और ब्रिटिश इंडिया की फौजों में क्रांति लाने की तैयारी में जुट गये। उन्होंने कलकत्ता में श्री रास बिहारी बोस से मुलाकात की। वह शचीन्द्रनाथ सांयाल को लेकर पंजाब चले आए। उनकी सैनिक क्रांति की योजना विफल हो गई और गिरफ्तारी के समय उनके पास दस बम बरामद हुए। उन पर मुकदमा चलाया गया और 17 नवम्बर 1915 को सेंट्रल जेल लाहौर में उन्हें फांसी दे दी गयी।

### करतार सिंह सराभा

24 मई 1896 - 16 नवम्बर 1915

भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करने के लिये अमेरिका में बनी गदर पार्टी के अध्यक्ष करतार सिंह सराभा आर्य समाजी विचारों से प्रभावित क्रांतिकारी थे। भारत में एक बड़ी क्रान्ति की योजना के सिलसिले में उन्हें अंग्रेजी सरकार ने कई अन्य लोगों के साथ फांसी दे दी। 16 नवम्बर 1915 को करतार को जब फांसी पर चढ़ाया गया, तब वे मात्र साढ़े उन्नीस वर्ष के थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगत सिंह उन्हें अपना आदर्श मानते थे।

### भाई बालमुकुन्द

1889 - 8 मई 1915

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी भाई बालमुकुंद भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे। सन 1912 में दिल्ली के चांदनी चौक में हुए लॉर्ड हार्डिग बम कांड में मास्टर अमीर चंद, भाई बालमुकुंद और मास्टर अवध बिहारी को 8 मई 1915 को ही फांसी पर लटका दिया गया, जबकि अगले दिन यानी ९ मई को अंबाला में बसन्त कुमार विश्वास को फांसी दी गई।

### सरदार स्वर्ण सिंह

19 अगस्त 1907 - 30 अक्टूबर 1994

सरदार स्वर्ण सिंह का जन्म पंजाब के जलंधर जिले के शंकर गांव में 19 अगस्त 1907 को हुआ था। वह एक आर्य कृषि परिवार में पैदा हुए थे। इसके बाद उन्होंने लाइलपुर खालसा कॉलेज में भौतिकी में एक व्याख्याता के रूप में काम किया। भारतीय राजनीति में सबसे अधिक समय तक भारत के केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री रहे।

*- शेष अगले अंक में*

# श्रावणी उपाकर्म : वेद स्वाध्याय, सेवा और सहयोग का लें संकल्प

**श्रावणी पर्व पर हम आर्यसमाजों में सात दिवसीय विशेष यज्ञ, दैनिक योग, दैनिक स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, समय-समय पर सेवा, दैनिक साधना आदि कार्यक्रमों का संकल्प लें और आयेजन करें, अपने बच्चे-बच्चियों का उपनयन-यज्ञोपवीत संस्कार करें-कराएं, अपने यज्ञोपवीत बदलें, नए यज्ञोपवीत धारण करें, यज्ञोपवीत के तीन धागे-सूत्रों का संदेश-उपदेश-आदेश श्रवण करें, सोचें, समझें और अमल करें। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से उऋण होने के लिए संकल्प के अनुसार पुरुषार्थ करें।**

**स्वाध्याय के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन से आनलाइन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, महर्षि दयानन्द जीवन चरित, आर्य समाज का इतिहास, उपनिषद, दर्शन शास्त्र बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स और अनेक अन्य आर्ष साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध्याय करें। हम आर्यों के घरों में चारों वेद, 11 उपनिषद, 6 दर्शन शास्त्र, बाल्मीकि रामायण, गीता, समृति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ और आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित प्रेरणाप्रद् पुस्तकें होनी ही चाहिए। ऑनलाइन पुस्तकें मंगाने के लिए https://eshop.the aryasamaj.org/shop/index पर लॉगइन करें अथवा लिए श्री रवि प्रकाश जी 9540040339 से सम्पर्क करें। किंतु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमें अपने घर में या आर्य समाज में केवल संग्रहालय नहीं बनाना बल्कि पुस्तकालय बनाना है। संग्रहालय तो वस्तुओं को सजाकर रखने कि प्रक्रिया है लेकिन पुस्तकालय में रखी हुई पुस्तक पढ़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली होती हैं। जबकि संग्रहालय में रखी हुई प्रत्येक वस्तु या पुस्तकें केवल आप देख सकते हैं, उन्हें ले नहीं सकते। उपयोगिता तो तभी है जब हम स्वाध्याय का नियम बनाएं। श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। - सम्पादक**

हमारी भरतीय वैदिक संस्कृति में श्रावणी पर्व का बड़ा महत्व है। यह पर्व वर्षा के मौसम में आता है। प्राचीन समय में हमारे पूर्वज अपने कर्तव्यों को परिपूर्ण करके वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विधिवत पालन करते हुए तपोवनों-आश्रमों में साधना पूर्ण जीवन जीते थे। जब चौमासा अर्थात बरसात का मौसम आता था तो वे वनों में सर्प आदि जहरीले जीव-जंतु, कीट पतंगों की अधिकता होने के कारण नगरों की और आते थे। इस मासैम में बरसात ज्यादा होने के कारण कृषि, व्यापार और अन्य सभी

विशेष कार्यो पर लगभग विराम लग जाता था। उस समय वर्षा भी इससे कहीं अधिक होती थी और आवागमन के साधन भी अपेक्षाकृत कम ही होते थे। अत: बरसात के इन दिनों का विशेष महत्व होता था। वानप्रस्थी और संन्यासी वृंदों के सान्निध्य में बड़े-बड़े यज्ञों और सत्संगों का आयोजन होता था। सभी आयुवर्ग के लोग इसमें भाग लेते थे। सारे समाज में एक उत्सव जैसा माहोल बन जाता था। वानप्रस्थी और संन्यासी लोग अपनी अनुभूत की हुई ज्ञान राशि का सहर्ष वितरण करते थे और बच्चे युवा स्त्री-पुरुष सब मिल-जुलकर उनके उपदेश,संदेश और कल्याणकारी आदेशों के अनुरूप वेद उपनिषद आदि ग्रंथों का स्वाध्याय किया करते थे। यह पर्व इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसमें घर के बड़े-बुजुर्ग अपने बच्चों के छोटे छोटे बच्चों को कहानियों के माध्यम से वीरता-धीरता के ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराते थे।

### श्रावण में सुनने का महत्व

श्रावण और श्रवण दोनों शब्दों में केवल 'आ' की मात्रा का अंतर है। साधरणतया श्रावण को बोलचाल की भाषा में सावन कहा जाता है। वस्तुत:श्रावण का मतलब श्रवण करने से जोड़कर देखा जाता है। मतलब श्रावण मास में हम सुनने वाले बनें, ध्यान पूर्वक सुनें - **भद्रं कर्णेभि: श्रणुयाम देवा:** अपने कानों से अच्छा सुनें, कल्याणकारी वेदोक्त वचनों को सुनें। जीवन में सुनना भी अवश्य आना चाहिए, लेकिन क्या सुनें क्या न सुनें यह भी हमें पता होना चाहिए। श्रावण में श्रवण करने का सबसे बड़ा यही संदेश है। हमें ईश्वर की वाणी को सुनना चाहिए, और केवल सुनना ही नहीं चाहिए उसे गुनना भी चाहिए, उस पर चिंतन मनन भी करना चाहिए, इससे भी आगे उस पर अमल भी करना चाहिए। इन दिनों में विशेष रूप से वेदों के परायण यज्ञों के साथ सत्संगों के आयोजन पहले भी होते थे और आर्य समाजों द्वारा आज भी होते हैं।

यह अलग बात है कि हम कितना सुनते हैं और क्या सुनते हैं। आजकल सबसे बड़ी समस्या यही है कि व्यक्ति सुनना नहीं चाहता केवल सुनाना चाहता है, अगर कोई काम की बात हो तब भी आदमी यही कहता है कि बस करिए मुझे पता है, छोटे बच्चे तो यहां तक कह देते हैं कि भाषण नहीं देना, जैसे माता पिता कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो बच्चे कहने लगते हैं कि हो गए शुरू भाषण देने के लिए, बस हमें नहीं सुनना.. क्योंकि अधिकांशतया समाज में सबकी बुद्धि पर अहंकार सवार हो गया है, सब केवल सुनाना चाहते हैं सुनना कोई नहीं चाहता। श्रावण मास में हम यह अवश्य सोचें कि जो वेदादि शास्त्रों को सुनेगा, सोचेगा, विचार करेगा, चिंतन मनन करेगा, और उन पर अमल करेगा वही कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

### श्रावणी पर्व पर यज्ञों का आयोजन

श्रावणी पर्व पर जहां एक तरफ वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने- सुनाने का महत्व माना गया है वहीं दूसरी ओर वेदों के वृहद यज्ञों के विशेष आयोजन करने का विधान है। असल में प्राचीन काल में यज्ञ और सत्संगों के आयोजनों पर विशेष मेलों की तरह भीड़ जुटती थी, उस समय राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य, पति-पत्नी, सभी लोग अपनी सामर्थ्यानुसार उत्तम श्रेष्ठ कार्यों के प्रचार में अपना योगदान भी देते थे और हर्षोल्लास से सेवा भी करते थे। इसीलिए उस समय सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र रहता था। लगभग सभी मनुष्य स्वस्थ और प्रसन्न रहते थे, धन-धान्य की अभिवृद्धि रहती थी। श्रावण मास में किए जाने वाले यज्ञों में विशेष रूप से ऋतु के अनुकूल सामग्री प्रयोग की जाती थी, वर्षा ऋतु में जो अनेकानेक जीवाणु- विषाणु पनपते हैं उनसे मानव समाज की रक्षा हेतु विशेष औषधीय सामग्री प्रयोग करने का ही विधान है । यज्ञ का जितना आध्यात्मिक लाभ होता है उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी लाभ होता है। यज्ञ हमारे आस-पास के सारे विषैले वातावरण को शुद्ध करके हमें उत्तम जलवायु प्रदान करते हैं, यज्ञ अपने आप में एक विज्ञान है। यज्ञ में डाला हुआ हर पदार्थ सूक्ष्म होकर वायु में मिल जाता है और वह चाहे कोई मित्र हो

या अमित्र, अपना हो या पराया हो, यज्ञ करता हो या न करता हो, आपके प्रति अच्छी भावना रखता हो या द्वेष रखता हो, सबको बराबर मात्रा में प्राप्त होता है। इसलिए यज्ञ को परोपकार का सबसे बड़ा महान कार्य माना गया है। श्रावणी पर आर्य समाज द्वारा लगातार विशेष यज्ञों का आयोजन करना एक महान परंपरा रही है। अत: इस अवसर पर हमें विशेष यज्ञों का आयोजन परिवार, समाज के स्तर पर करना चाहिए।

### श्रावणी और यज्ञोपवीत

श्रावणी पर यज्ञोपवीत धारण करना हमारी प्राचीन परंपरा है। इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नए यज्ञोपवीत धारण करने का भी विधान है। यज्ञोपवीत हमारे लिए कर्तव्य परायणता की प्रेरणा का प्रतीक चिन्ह है। यज्ञोपवीत के संबंध में यह स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि यह हमारा व्रत सूत्र है, यह विद्या का चिन्ह है, यह हमें मानवीय कर्तव्यों का स्मरण कराता है, जैसे पुलिस और सेना के प्रत्येक

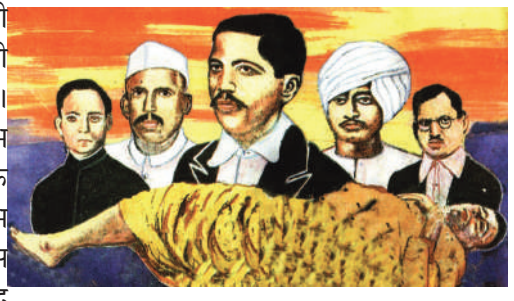

छोटे-बड़े व्यक्ति के पद और प्रतिष्ठा का सूचक उसकी पोशाक में लगा हुआ चिन्ह होता है, जैसे किसी भी विशेष सरकारी कार्यक्रम में व्यक्ति की योग्यता और पद प्रतिष्ठा के अनुसार उसके बैठने की व्यवस्था होती है और उस परंपरा का उल्लंघन भी आपत्तिजनक माना जाता है। उसी प्रकार यज्ञोपवीत के तीन तार प्रतीक होते हुए भी मानव जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। जैसे बिना वर्दी के किसी सेना व पुलिस अधिकारी का कोई वैधानिक अधिकार में महत्व नहीं होता, उसी प्रकार मानव जीवन में यज्ञोपवीत धारण करे बिना हमारा कोई सही उददेश्य और आधार नहीं होता। हमारे आचरण और व्यवहार को सही दिशा मिले, हम अपने कर्तव्य पथ पर अडिग होकर चलें, हमारी प्रतिष्ठा बढ़े और हम कर्तव्य पालन के लिए प्रेरणा प्राप्त करते रहें इसके लिए हमें व्रत सूत्र मतलब यज्ञोपवीत पहनना ही चाहिए। यह हमें आलस्य और प्रमाद से भी बचने की प्रेरणा देता है। इस सूत्र को पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी सबको धारण करना चाहिए। कुछ लोग पत्नी के स्थान पर पति 6 तार का यज्ञोपवीत धारण कर लेते हैं, जबकि ऐसा कोई शास्त्रीय विधान नहीं है । यह केवल अंधविश्वास है, कभी भी पत्नी का भोजन पति नहीं करता, पत्नी की बजाए पति व्यायाम करके स्वस्थ नहीं होता, सबका अपना-अपना आत्मा है, अपना अपना शरीर है, अपने अपने कर्तव्य हैं और अपनी-अपनी शक्ति है, सामर्थ्य है, सबके कर्तव्य और कर्म भी अपने-अपने अलग हैं, फिर कोई पुरुष कैसे अपनी पत्नी के नाम का यज्ञोपवीत पहन सकता है? इसलिए सबको अपना यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए और श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर यज्ञोपवीत बदलना भी चाहिए।

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

Chapter - 10

# Arya Samaj and the Aryas : Yoga Vidya

Part- 1

Yoga in Sanskrit as well as in Hindi means'addition. In the spiritual sense, yoga means addition of mind with soul thereafter addition of soul with God. Yoga is the only way to connect with God. Maharshi Patanjali, the famous sage in history has mentioned eight omponents of complete Yoga - Darshan ( philosophy of yoga ). These eight components are : yama, niyama, asana, pranayama, pratyahar, dharna, dhyana, and samadhi.

These components are sequential : the first two, that is, yama and niyama are the ideal rules of a noble life.

**Yama :** Yama are of five kinds: ahimsa (non violence), satya (truth), asteya (avoid stealing others' things), Brahmacharya (leading the life of an ascetic) and aparigraha (non- attachment). By practicing these yamas one can rid oneself of all the negativities of the mind.

**Niyama :** Niyama are also of five kinds shaucha ( cleanliness of body and mind ) : Santosh (contentment), tupa (hard work), swadhyaya (self study) and Ishvar Pranidhan ( total surrender to God). These niyamas develop cleanliness and strength of body, a contented life, immunity against major crises in life, a base for knowledge from scriptures and finallydevotion to God.

**Asana :** A yoga-asana is a posture in harmony with one's inner consciousness. It aims at the attainment of a sustained and comfortable sitting posture to facilitate meditation. Asanas also help in balancing and harmonising the basic structure of the human body. A regular practice of yoga - asanas has an immense amount of therapeutic value. Besides various physiological benefits, they positively affect our minds, our life force energies, as well as our creative intelligence.

**Pranayama :** For attainment of complete yoga, one has to be the master of pranayama too. The process of pranayama is practiced by sitting in a comfortable *asana* (posture), generally in *sukhasana,* which includes a set of exercises of inhaling and exhaling one's breath in a particular fashion. Pranayama helps one in attaining longer stretches of inhalation and exhalation. Such practice makes him perfect for meditation. In fact, asanas and pranayamas serve as a complete package for the body to remain fit, as both are complementary to each other.

**Pratyahara :** Pratyahara involves managing the senses properly and going beyond them instead of simply closing and suppressing them. It involves reining in the senses for increased attention, rather than distraction. One who practices Ishvar Pranidhana gradually becomes devoted and attached to God. It is necessary to practice pratyahara for achieving the three meditative stages of dharana, dhyana and samadhi. Perfecting this technique of yoga - vidya is also essential in order to break out from the eternal cycle of rebirths.

**Dharana :** The last three limbs of ashtanga yoga are the three essential stages of meditation. I involves developing and extending one's powers of concentration. This consists of various ways of directing and controlling one's attention and mind fixing skills, such as concentrating on the chakras or turning inwards.

**Dhyana :** Dhyana is the state of meditation, when the mind attains the ability to sustain its attention on a particular spot, without getting distracted. Strictly speaking, unlike the other six components of ashtanga - yoga, this is not a technique but rather a state of mind, when one reaches a delicate state of awareness. This state rightfully precedes the final state of samadhi.

**Samadhi :** Samadhi, or total absorption is the ability to become one with the true self and merge into the object of concentration. In this state of mind, the perceiver and the object of perception unite through the very act of perception - a true unity of thoughts and actions. This is the acme of all yogic endeavours - the ultimate yoga or connection between the individual and the universal soul !

While discussing different types of yoga practices, it is essential to know what yoga is not ! In today's world, people have a tendency to sell everything as yoga. The famous hatha - yoga is no form of yoga. Practices, like basti, tratak, neti and dhauti are part of naturopathy and not of yoga. Another belief that is propagated is that by performing yoga, one can enter into someone else's body. This is absurd and unacceptable. Lots of false rumours s are sprad in the society in the name of yoga. The Western world's curiosity to understand yoga has created a market for so - called half - informed yogis to open shop and start selling falsehood.

**Naam - jaap**

Arya Samaj believes in the need for understanding God and of surrendering oneself to him. The purpos of remembering him is a self - commitment against doing anything wrong or forbidden against the system However, Arya Samaj disagrees with the blind practice of chanting names like Rama - Rama, Hare Rama Hare Krishna, etc. If one really wants to temember Lord Rama or Lord Krishna, one must follow their great qualities in his life as that would be a true tribute to them.

The chanting of *"Aum"* in ones heart is chanting of God as Aum is considered to be his name and not that of a mortal person. There is no need of declaring to one and all that God is everywhere, including within us.

***-: With thanks :-***
***"The Beliefs of Arya Samaj"***
**by shri Mahendra Arya**

---

आर्योद्देशयरत्नमाला पद्यानुवाद

## विद्या-अविद्या

**१६-विद्या**

प्रभु से भू तक तत्व का
सत्य ज्ञान, उपयोग।
जिससे हो 'विद्या' वही,
जानें सबही लोग ।।21।।

**१७-अविद्या**

जो विद्या विपरीत भ्रम,
अन्धकार, अज्ञान ।
उसे 'अविद्या' जानकर,
रहते दूर सुजान ।।22।।

**साभार :**
**सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से**

---

## निर्वाचन समाचार

**आर्यसमाज कालकाजी**
**ए ब्लाक, नई दिल्ली-110019**

प्रधान : श्री रमेश गाडी
मन्त्री : श्री आदर्श सलूजा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रवीन कुमार ललन

**आर्यसमाज जहांगीरपुरी**
**के-1046, दिल्ली-110033**

प्रधान : श्री चन्द्र विजय
मन्त्री : श्री रामभरोसे
कोषाध्यक्ष : श्री अरविन्द आर्य

---

प्रेरक प्रसंग

## मधुर याद तेरी सताती रहेगी

आर्यसमाज के आरम्भिक युग में आर्यसमाज के युवक दिन-रात वेद-प्रचार की ही सोचते थे। समाज के सब कार्य अपने हाथों से करते थे। झाडू लगाना और दरियाँ बिछाना बड़ा श्रेष्ठ कार्य माना जाता था। तब खिंच-खिंचकर युवक समाज में आते थे। रायकोट जिला लुधियाना (पंजाब) में एक अध्यापक मथुरादास था। उसने अध्यापन कार्य छोड़ दिया। आर्यसमाज के प्रचार में दिन-रैन लगा रहता था। बहुत अच्छा वक्ता था। जो उसे एक बार सुन लेता बार-बार मथुरादास को सुनने के लिए उत्सुक रहता।

मित्र उसे आराम करने को कहते, परन्तु वह किसी की भी न सुनता था। ग्रामों में प्रचार की उसे विशेष लगन थी। सारी-सारी रात बातचीत करते-करते आर्यसमाज का सन्देश सुनाने में जुटा रहता। अपने प्रचार की सूचना आप ही दे देता था। खाने-पाने का लोभ उसे छू न सका। रूखा-सूखा जो मिल गया सो खा लिया। प्रान्त की सभा अवकाश पर भेजे तो अवकाश लेता ही न था।

रुग्ण होते हुए भी प्रचार अवश्य करता। ज्वर हो गया। उसने चिन्ता न की। ज्वर क्षयरोग बन गया। उसे रायकोट जाना पड़ा। वहाँ इस अवस्था में भी कुछ समय निकालकर प्रचार कर आता। नगर के लोग उसे एक नर-रत्न मानते थे। लम्बी-लम्बी यात्राएँ करके, भूखे-प्यासे रहकर, दु:ख-कष्ट झेलते हुए उसने हँस-हँसकर अपनी जवानी ऋषि की राह में वार दी।

ऐसे कितने नींव के पत्थर हैं जिन्हें हम आज कतई भूल चुके हैं। अन्तिम वेला में भी मथुरादासजी के पास जो कोई जाता, वह उनसे र्आसमाज के कार्य के बारे में ही पूछते। अपनी तो चिन्ता थी ही नहीं।

*- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*
*साभार :*
***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*** **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

MDH **हवन सामग्री**
**मात्र 90/- किलो**
**10 एवं 20 किलो**
**की पैकिंग में उपलब्ध**
**प्राप्ति स्थान**
**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
**15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001**
**मो. 9540040339**

## आर्यन अभिनन्दन समारोह

आर्य रत्न ठाकुर विक्रम सिंह जी के 80वें जन्म दिवस 19 सितंबर- 2022 को दिल्ली में विशेष अभिनंदन समारोह होगा।

1. जो शिक्षक, शिक्षिकाएं, आर्यवीर दल एवं आर्य वीरांगनाओं के कैंप लगाते हैं सभी सादर आमंत्रित हैं।
2. गुरूकुलों, कन्या गुरूकुलों के आंचार्य, अध्यापक जिनका अब तक सम्मान नहीं हुआ सभी सादर आमंत्रित हैं।
3. आर्य सन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक, महिला उपदेशक आदि जिनका अब तक सम्मान नहीं हुआ है सभी सादर आमंत्रित हैं।

पूर्ण विवरण परिचय सहित 30 अगस्त - 2022 तक निम्न पते/मेल पर भेंजे।

**-: पता :-**
**ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट** (रजि.)
**राष्ट्र निर्माण पार्टी**
ए-41, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-II, निकट- मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 110024
**Phone : 011-45791152, Email : rashtranirmanparty@gmail.com**

पृष्ठ 3 का शेष

## न्याय के लिए भटकते क्रान्तिकारी

क्रांतिकारियों को शहीद मान लेते हैं लेकिन साल 2013, 2016 और 2018 में जो आरटीआई डाली गई, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जवाब नहीं दिया कि भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को सरकार ने शहीद का दर्जा दिया है या नहीं या कब दिया।

24 अप्रैल 2016 को बीजेपी नेता अनुराग सिंह ठाकुर ने संसद में कहा, 'जेएनयु दिल्ली विश्वविद्यालय में एक किताब जिसका टाइटल इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस' है, जिसमें भगत सिंह को रेवोल्यूशनरी टेररिस्ट, आतंकवादी के रूप में दिखाने की कोशिश की गई है। भगत सिंह ने इस देश को आजाद किया तब जाकर हम लोग इस सदन में बैठे हैं। उन्होंने कहा आप भगत सिंह को आतंकवादी नहीं कह सकते।' उन्होंने इस पुस्तक के बहाने कांग्रेस और लेफ्ट को घेरने की कोशिश की थी। तब ज्योतिरादित्य सिंधिया जो अब बीजेपी के हिस्सा है उन्होंने अनुराग को बताया था कि अब तक उनकी सरकार ने भी भगत सिंह को सरकारी रिकॉर्ड में शहीद घोषित नहीं किया है।

इसके अलावा 6 जून 2018 को दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में भगत सिंह की जेल डायरी के विमोचन कार्यक्रम में इसी सवाल पर तत्कालीन कानूनमंत्री रविशंकर प्रसाद जी ने भी सिर्फ इतना कहकर पल्ला झाड लिया कि शहीद भगत सिंह को किसी आरटीआई के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं। वो शहीद थे, हैं और रहेंगे।

ये बात सच भी है इस देश के लोग जानते हैं कि भगत सिंह ने देश के लिए अपनी जान दे दी, लेकिन सरकार को शहीद घोषित करने में क्या दिक्कत है ये सवाल जरुर बन जाता है? हो सकता है कि सरकार को भगत सिंह से कोई सियासी फायदा नहीं होता हो! इसलिए वह इस बारे में जज्बात भी नहीं दिखाती। हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार जब चाहे तब भगत सिंह को दस्तावेजों में शहीद घोषित कर सकती है, इसमें कोई तकनीकी दिक्कत नहीं है। भगत सिंह अंग्रेजों के लिए आतंकी थे, हमारे लिए वह शहीद अमर बलिदानी हैं। लेकिन दुर्भाग्य ये है कि आजाद भारत में भी उन्हें कुछ किताबों में क्रांतिकारी आतंकी लिखा जा रहा है और सिमरनजीत सिंह जैसे सांसद खुलेआम भगतसिंह को आतंकी बोल रहे हैं क्योंकि वे जानते हैं वे वही बोल रहे हैं जो सरकारी रिकॉर्ड में लिखा है। इस कारण उनका कुछ नहीं बिगड़ सकता है। किन्तु शर्म का विषय यह है जब देश अपना आजादी का अमृतमहोत्सव मना रहा हो उस समय क्रांतिकारियों के लिए आतंकी जैसे शब्दों का संबोधन हो रहा हो तो कोई माँ क्यों देशभक्त पैदा करना चाहेगी?

*- राजीव चौधरी*

पृष्ठ 2 का शेष

## आजादी का अमृत महोत्सवः आईए .....

इसलिए आज देश की युवापीढी को आजादी के अमृत महोत्सव पर भारत के गौरव को अक्षुण बनाए रखने के लिए देश के प्रति त्याग, समर्पण और बलिदान की भावना को प्रबल बनाए रखने का संकल्प करना चाहिए, अपने देश के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर मानव कल्याण के पथ पर अग्रसर होने का संकल्प लेना चाहिए और जो देश विरोधी तत्व हैं उनसे भी संघर्षरत रहने का जज्बा जगाए रखने का संकल्प करना चाहिए। तभी यह आजादी का अमृत महोत्सव मनाना सार्थक होगा।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने कहा था-आज आवश्यकता है मुट्ठी बांधने की। हम इकट्ठे होंगे तो आजादी मिलेगी। हमें आज़ादी तो मिल गई; पर हमने आजादी की कीमत को नहीं पहचाना। आज फिर शैतानी ताकते सिर उठा रही हैं, छदम युद्ध देश के भीतर ही चल रहा है, हमारी संस्कृति और सभ्यता को लोग नष्ट करने में लगे हैं, हिंदू सोया हुआ है, सपनों में खोया हुआ है, इसे नींद से जागना होगा, अपने आपको पहचानना होगा, अपने पूर्वजों से शिक्षा लेनी होगी तभी स्वाधीनता सुरक्षित रहेगी। दुर्भाग्य की बात है कि जो आधी-अधूरी आज़ादी हमें प्राप्त हुई, उसे भी सुरक्षित रहने नहीं दिया जा रहा है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था-"आज़ादी प्राप्त करना कठिन नहीं है, लेकिन आज़ादी को सुरक्षित रखना ज़रूर कठिन है। आने वाले समय में इसके लिए बड़ी कुर्बानियां देनी होंगी।" आज भाषा के नाम पर, वेशभूषा के नाम पर, भावनाओं के नाम पर समाज को बांटा जा रहा है। अपनी आज़ादी को सुरक्षित रखने की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए कुर्बानियां ज़रूर देनी पड़ेंगी। अगर अपनी आज़ादी की सुरक्षा चाहते हो तो अपने बच्चों को अपना इतिहास सुनाओ, अपने वीरों की शौर्य-गाथा, सुनाओ, जिससे देशभक्ति की घुट्टी हमारे अन्दर पहुंचे। फिर से कोई सुभाष, भगतसिंह, कोई रामप्रसाद हमारे बीच पैदा हो। क्योंकि हमारी आज़ादी इन्हीं के कारण सुरक्षित रह सकती है। दुनिया में भारत से बढ़कर कोई दूसरा देश नहीं है। भारत की संस्कृति से बढ़कर संसार में कोई दूसरी संस्कृति नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि इसे खोखला करने वाले दीमक आज भी हमारे देश में मौजूद हैं। उन वीरों की जय ज़रूर बोलना और उन बलिदानी वीरों को ज़रूर याद करना, जिन्होंने देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। यह हमेशा ध्यान रखना जो कौम अपने शहीदों को याद किया करती है, वह कौम हमेशा जिन्दा रहती है। जो कौम अपने शहीदों को भूल जाती है, वह कभी जिन्दा नहीं रह पाती।

*- सम्पादक*

पृष्ठ 5 का शेष

## श्रावणी उपाकर्म : वेद स्वाध्याय, सेवा ...

### यज्ञोपवीत की रक्षा हेतु आर्य समाजियों का बलिदान

आर्य समाज के इतिहास में क्रांतिवीर श्री रामरखामल को हमें नमन करना चाहिए, जिन्होंने अपने यज्ञोपवीत की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। काले पानी के राज बंदियों को, क्रांतिकारियों को जेल के नियम के अनुसार यज्ञोपवीत उतारना पड़ता था। ऐसा ईसाई शासकों ने अनिवार्य कर रखा था। वीर रामरखामल नाम के एक आर्य क्रांतिकारी को भी आज्ञा दी गई, उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया, अन्याई जेल अधिकारियों ने, पाषाण हृदय विधर्मी अपराधियों ने उसको उसका व्रत सूत्र उतारने को कहा और जब उसने नहीं उतारा तो उन्होंने क्षण भर में उसे खंडित कर दिया। वीर रामरखामल ने भूख हड़ताल करके अपने प्राण दे दिए, लेकिन बिना यज्ञोपवीत के अन्न ग्रहण न करने का व्रत लेकर उसने इस व्रतसूत्र के लिए, धर्म के लिए अपना बलिदान कर दिया। यह बात उस समय की है जब स्वातंत्रय वीर सावरकर भी अंडमान की जेल में बंदी थे।

### यज्ञोपवीत और हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह

सन 1939 के हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी यज्ञोपवीत की महिमा और गौरव की अपनी ही गाथा है। आर्य सत्याग्रह से पूर्व निजाम उस्मान ने डींग मारते हुए एक गजल में लिखा था-

बंद नाकूस हुआ
सुनके नकाय तकबीर।
जलजला आ ही गया
सिसले जिन्नार पै भी।।

अर्थात मस्जिदों में अल्लाह हू अकबर की आवाज सुनकर हिंदुओं के दिल दहल गए। मंदिर के शंख बंद हो गए। इनके भयभीत होने से शरीर कांपने लगे और शरीर पर लिपटे यज्ञोपवीत पर भी भूकंप -सा आ गया।

उस समय पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने यज्ञोपवीत के लिए अपनी कविता में लिखा था-

तीन धागे थे फकत
सूत के कच्चे लेकिन।
बाजी जुन्नार ने ली
हैदरी तलवार पै भी।।

हजारों आर्य वीरों ने धर्म की रक्षा के लिए जेल जाकर, कई एक लोगों ने बलिदान देकर यज्ञोपवीत के तीन धागों की प्रेरणा से ऐसा शक्ति और साहस से चमत्कार कर दिखाया कि संसार देखता ही रह गया। इन्हीं सूत के तीन धागों ने हैदरी तलवार पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त करके उस्मान को धूल चटा दी। वीर वेद प्रकाश, धर्म प्रकाश, भाई श्याम लाल आदि ने प्राण पण से अपने यज्ञोपवीत की रक्षा की। उन्होंने अपने प्राण देकर रक्षा बंधन का पर्व मनाया, श्रावणी पर्व उनके गौरवपूर्ण बलिदानों से महिमामंडित हो गया। श्रावणी पर्व पर अब प्रतिवर्ष दक्षिण के वीरों का पुण्य स्मरण किया जाता है-

उपनयन धारकर अपने नयन खोलिए,
भविष्य को उज्जवल बनाइए, अपने मन का मैल मिटाइए।

*- आचार्य अनिल शास्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

## प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय ध्वज फहराकर....

समर्पण की भावना होगी तब तक आर्य समाज देश सेवा के पथ पर उन्नति प्रगति और सफलता प्राप्त करता रहेगा।

सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुसार प्रत्येक आर्य समाज, शिक्षण संस्थान, आर्य सेवा प्रतिष्ठान और समस्त आर्य परिवार अपने अपने क्षेत्रों में एकत्रित होकर तिरंगा यात्रा के आयोजन करें। इसके लिए सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य यह सुनिश्चित करें कि 13 अगस्त से 15 अगस्त तक तिरंगा यात्रा का आयोजन अवश्य होना चाहिए। जिससे पूरी दिल्ली में आर्य समाज द्वारा देश भक्ति की लहर चलती हुई प्रतीत होवे। इस तिरंगा यात्रा में हर आयु वर्ग के आर्यजनों को सम्मिलत होने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न करें। इन तिरंगा यात्राओं के फोटो, वीडियो आर्य संदेश टीवी चैनल और पत्रिका में प्रसारित करने हेतु अवश्य भेजें।

*- विनय आर्य, महामन्त्री*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 अगस्त, 2022 से रविवार 7 अगस्त, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 3-4-5/8/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 अगस्त, 2022



आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों हेतु

## उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृति योजना

आर्यसमाज के विद्यालयों, गुरुकुलों, आदिवासी/वनवासी क्षेत्रों में संचालित आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त गरीब/आर्थिक स्प से कमजोर तथा आर्य कार्यकर्ताओं के प्रतिभावान बच्चे जो कक्षा 12वीं के उपरान्त मैडिकल, इंजीनियरिंग, विधि जैसे उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेना चाहते हैं अथवा पढ़ रहे हैं

वर्ष 2022-23 की छात्रवृति के लिए आवेदन करें

।।ओ३म्।।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

आमंत्रित आवेदन

भूषण एवं विजय वर्मा

छात्रवृत्ति योजना

भारत में12वीं पास छात्र जो उच्चशिक्षा जैसे कि चिकित्सा, इंजीनियरिंग और अन्य उच्च पाठ्यक्रमों के लिए आर्थिक अभावग्रस्त सुयोग्य छात्रों का सहयोग करने हेतु एक पहल

Apply Now

www.pratibhavikas.org/scholarship

For more information contact:

9311721172 E-Mail : dss.pratibha@gmail.com

सिविल सर्विसेज IAS/IPS परीक्षा की तैयारियों के लिए

निःशुल्क आर्यसमाज का एकमात्र निःशुल्क संस्थान

## आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

वर्ष 2023-24 की तैयारी करने वाले आर्य युवा ध्यान दें

आवेदन की अन्तिम तिथि 10 अगस्त, 2022 - जल्दी करें

प्रतिभा आपकी - सहयोग हमारा

Arya Pratibha Vikas Sansthan

An Initiative of Arya Samaj

Inspired & Founded by Mahashay Dharampal

Announces Support to Meritorious & Deserving at

SUSHIL RAJ ARYA PRATIBHA VIKAS KENDRA

UPSC CIVIL SERVICES EXAM (IAS/IPS/IFS etc.) Aspirants

Sansthan Will Sponsor Coaching, Training, Mentoring and Residential Facility at Delhi to Selected Candidates.

Interested candidates can apply online at

Website : www.pratibhavikas.org

Last date for registration - 10 August 2022

For more information contact:

9311721172 E-Mail : dss.pratibha@gmail.com

Run by

Akhil Bharatiya Dayanand Sewashram Sangh


प्रतिष्ठा में,


।।ओ३म्।।

अपने उत्सवों को विश्व के कोने कोने में पहुंचाएं

आर्य संदेश टीवी

www.AryaSandeshTV.com

Arya Sandesh TV

## श्रावणी एवं जन्माष्टमी

के अवसर पर अपने अपने आर्य समाज में आयोजित

वेद प्रचार कार्यक्रम

का सीधा प्रसारण एवं रिकॉर्डिंग करवाएं

9540944958

20 से अधिक प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध

पर उपलब्ध

JBM Group

Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002

91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह